लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला–४०

परमानन्दशास्त्रिरचनावलिः

प्रधानसम्पादकः
प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री
कुलपतिः

सम्पादकः
सत्यप्रकाशशर्मा

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः, नवदेहली

अनुक्रमः

पुरोवाक् : प्रो. पी.एन्. शास्त्री — iii

सम्पादकीयम् — v

प्रो० परमानन्दशास्त्रिणः संक्षिप्तं जीवनवृत्तं कर्तृत्वञ्च : सत्यप्रकाश शर्मा — ix

पं. परमानन्दशास्त्रिणां सर्जनकौशलम् : देवर्षिः कलानाथशास्त्री — xvii

परमानन्दशास्त्रिरचनावलिः

1. जनविजयम् (महाकाव्यम्) — 1–116
2. चीरहरणम् (महाकाव्यम्) — 117–264
3. गन्धदूतम् — 265–313
4. परिदेवनम् — 315–330
5. वानरसन्देशः — 331–361
6. मन्थनम् — 363–413
7. कौन्तेयम् — 415–464
8. भारतशतकम् — 465–485
9. परमानन्दसूक्तिशतकम् — 487–517
10. अन्योक्तितूणीरम् — 519–568
11. विप्रश्निका — 569–578
12. सन्तोषसुरतरुः — 579–620
13. स्वरभारती-1 — 621–847
14. आनन्दगीतिका (स्वरभारती-2) — 849–880

अनुक्रमः

पुरोवाक् : प्रो. पी.एन्. शास्त्री *iii*

सम्पादकीयम् *v*

प्रो० परमानन्दशास्त्रिणः संक्षिप्तं जीवनवृत्तं कर्तृत्वञ्च : सत्यप्रकाश शर्मा *ix*

पं. परमानन्दशास्त्रिणां सर्जनकौशलम् : देवर्षिः कलानाथशास्त्री *xvii*

परमानन्दशास्त्रिरचनावलिः

1. जनविजयम् (महाकाव्यम्) 1–116
2. चीरहरणम् (महाकाव्यम्) 117–264
3. गन्धदूतम् 265–313
4. परिदेवनम् 315–330
5. वानरसन्देशः 331–361
6. मन्थनम् 363–413
7. कौन्तेयम् 415–464
8. भारतशतकम् 465–485
9. परमानन्दसूक्तिशतकम् 487–517
10. अन्योक्तितूणीरम् 519–568
11. विप्रश्निका 569–578
12. सन्तोषसुरतरुः 579–620
13. स्वरभारती–1 621–847
14. आनन्दगीतिका (स्वरभारती–2) 849–880

"आत्मैव पुत्रो भवतीति सिद्धं
जातोऽयमन्धस्य यतोऽन्ध एव"।
इत्यट्टहासेन समं सखीभिः
सतालमालोकितवान् हसन्तीम् ॥5॥

भूमि में जल के, जल में भूमि के, द्वार में दीवार के और दीवार में द्वार के भ्रम के कारण (दुर्योधन को) लड़खड़ाते, गिरते, टकराकर खिन्न होते और मार्ग-रोध के कारण स्थित देखकर-'यह बात सिद्ध हो गयी कि मनुष्य पुत्र के रूप में स्वयं ही उत्पन्न होता है क्योंकि यह अन्धे का अन्धा ही पैदा हुआ है' यह कहकर सखियों के साथ ताली बजाकर हँसती हुई द्रौपदी को उसने देखा॥4-5॥

स्वयंवरे चापि कटु ध्वनन्ती
याऽलक्ष्यसिद्धास्य गता शराली।
जहास यत्सापि पतिंवरा ता-
मुद्दीपनायास्य रुषां तदासीत् ॥6॥

स्वयंवर के समय भी (लक्ष्यवेध के प्रयत्न में) उसकी जो बाणावलि लक्ष्य पर न लगकर कटु ध्वनि करती हुई गिरी और पतिंवरा द्रौपदी हँस पड़ी थी, उस घटना ने भी उसके कोप को उद्दीप्त किया॥6॥

मत्स्याक्षिवेधी प्रहितोऽर्जुनेन
पुरा हृदीवास्य शरो निविष्टः।
क्षते स्थितेऽस्मिंस्तत एव कालात्
कृष्णावचः क्षारमिव प्रपन्नम् ॥7॥

अर्जुन के द्वारा छोड़ा हुआ, मत्स्य की आँख को वेध देने वाला वह बाण पहले ही मानो उस (दुर्योधन) के हृदय में धँस गया था और तभी से एक घाव उसके हृदय में विद्यमान था। कृष्णा का (राजसूय के अवसर पर कहा हुआ) वचन उसपर नमक के समान लगा॥7॥

चिकित्स्यमाहुः क्षतमस्त्रजातं
वचःकृतं तद् विचिकित्स्यमेव।
तत्रापि तद् यद् वनिताकृतं स्यात्
सा चेदथान्यास्त्रजिता कुमारी ॥8॥

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(भारतशासन-मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः,
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायितः मानितविश्वविद्यालयः)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058

दूरभाष : 011-28524993, 28521994, 28520977

email : rsks@nda.vsnl.net.in
website : www.sanskrit.nic.in